25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बाप और वर्से को याद करने में तुम्हारी कमाई भी है तो तन्दरूस्ती भी है, तुम अमर बन जाते हो"

Double Benefits

प्रश्न:हृदय को शुद्ध बनाने की सहज युक्ति कौन सी है?

उत्तर:- कहाँ भी रहो ट्रस्टी होकर रहो। हमेशा समझो "हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं"। शिवबाबा के भण्डारे का भोजन खाने वालों का हृदय शुद्ध होता जाता है। प्रवृत्ति में रहते अगर श्रीमत प्रमाण डायरेक्शन पर ट्रस्टी बनकर रहते तो वह भी शिवबाबा का भण्डारा है, मन से सरेन्डर हैं।

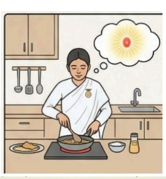

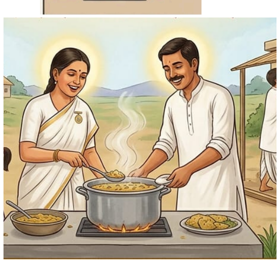

(Invincible Determination)

इस जगह आ गयी चाहतें अब मेरी
छीन लूँगा तुम्हे सारी दुनिया से ही

तेरे इश्क पे हाँ हक़ मेरा ही तो है
कह दिया है ये मैंने मेरे रब(ड्रामा) से भी

जिस रास्ते तू ना मिले (श्रीमत के अलावा कुछ भी)
उस पे ना हो मेरे कदम (चाहे वह कितना ही भौतिक/दुनियावी प्राप्तियों से भरपूर क्यों ना हो)

(जिस रास्ते तू मुझे मिले, उस रास्ते पर चाहे अपार/अनगिनत दर्दनाक पीड़ाएं क्यों ना हो और पीड़ाएं भी ऐसी जो देखने वाले की रूह तक कांप जाए या फिर उस रास्ते पर चलते, मेरी जान भी क्यों न चली जाए
फिर भी
उस ही रास्ते पर होंगे मेरे कदम...)

तेरे बिन अब ना लेंगे एक भी दम(श्वास)
तुझे कितना चाहने लगे हम

तेरे साथ हो जायेंगे ख़तम
तुझे कितना चाहने लगे हम

शिवबाबा ने कहा है की मुझसे ऊपर ड्रामा है।

तो इसका एक मतलब ये हुआ की शिवबाबा मेरे लिए साजन/सजनी/माता/पिता/बच्चा/ दोस्त ... in short सबकुछ है और ड्रामा हुआ मेरे लिए रब/खुदा।

25/03/2025

बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? (1) ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? (2) शिवबाबा। और फिर (3) रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

याद

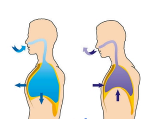

सेवा

शिवबाबा से सकाश लो

श्रृष्टि को सकाश दो

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

\- कबीर

24-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - सुख देने वाले बाप को बहुत-बहुत प्यार से याद करो, याद बिगर प्यार नहीं हो सकता"

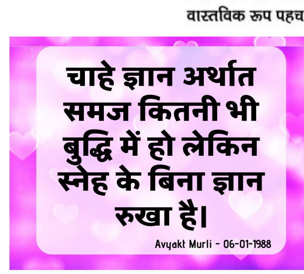

p.

25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। जन्म-जन्मान्तर आधाकल्प बच्चों ने सतसंग किये हैं, साधू-सन्त, पण्डित आदि सब मनुष्यों का सतसंग होता है, यह कोई भी मनुष्य का सतसंग नहीं। इसको कहा जाता है रूहानी सतसंग। सुप्रीम रूह रूहों के साथ रूहरिहान अर्थात् सतसंग करते हैं। यहाँ तुम कोई मनुष्य से नहीं सुनते हो, न देवताओं से सुनते हो। तुम सुनते हो भगवान से। भगवान को हमेशा निराकार कहा जाता है और भगवान आते ही तब हैं जब बच्चों को भगवान-भगवती बनाने के लिए पढ़ाना है। भगवान और भगवती का पद सिवाए भगवान के कोई दे न सके। तुम बच्चे जानते हो कल्प-कल्प संगमयुग होता है तो निराकार भगवान आकर हमको ज्ञान देते हैं। यह भी सिर्फ तुम ही समझते हो, दूसरा कोई मुश्किल समझ सके। शिवबाबा आते हैं जरूर, परन्तु उनके बदले श्रीकृष्ण को गीता का भगवान कह दिया है। तो जरूर सबकी बुद्धि में मनुष्य तन ही आता होगा। तुम ही दैवीगुण वाले थे और अब आसुरी गुण वाले बने हो। फिर अब दैवीगुण वाले बनते हो। दैवीगुण वालों को ईश्वरीय सम्प्रदाय, आसुरी गुण वालों को आसुरी सम्प्रदाय कहा जाता है। अब निराकार बाप

Mind very well...

Exclusive Authority of Shiv baba

वाह रे मैं...

Simple Logic

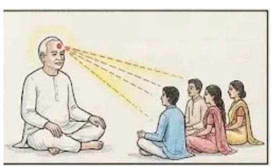

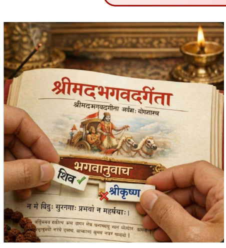

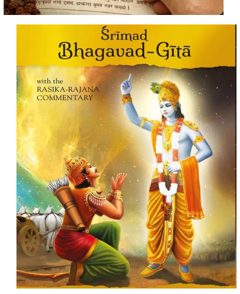

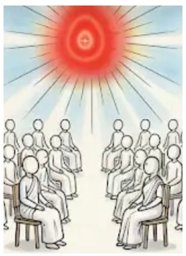

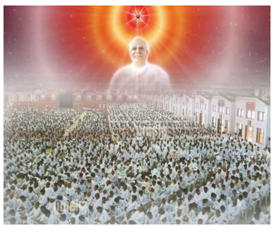

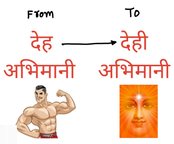

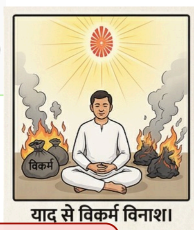

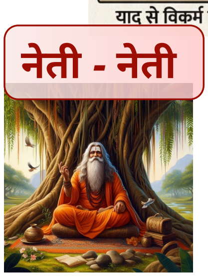

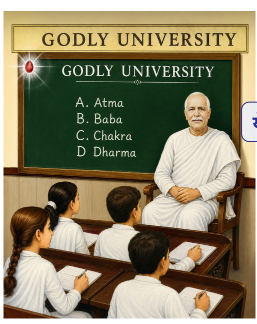

निराकार सम्प्रदाय अर्थात् आत्माओं को पढ़ाते हैं, इसलिए कहा जाता है ईश्वरीय सम्प्रदाय अथवा रूहानी सम्प्रदाय, जिन्हें रूहानी बाप आकर पढ़ाते हैं। अभी तुम रूह-अभिमानी बनते हो। हम आत्मा हैं, बाप हमको पढ़ाते हैं। कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। रूहों को ही पढ़ाते हैं, वही नॉलेजफुल है और ऋषि-मुनि आदि तो सब नेती-नेती कहते गये अर्थात् हम रूह को नहीं जानते हैं। जब तक वह ज्ञान सागर सम्मुख न आये तो ज्ञान कैसे समझाये। यह अच्छी रीति समझने की बातें हैं।

ये पक्का समझ लो..

हमको कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं, हमको बाप पढ़ाते हैं। वह है बेहद का बाप निराकार। यह भी बच्चों को समझाया है, साकार और निराकार दो बाप हर एक को होते हैं। एक रूहानी और दूसरा जिस्मानी। रूहानी बाप ही आकर रूहों को पावन बनाते हैं। तुम जानते हो हम पावन थे, पतित बने फिर पतित से पावन कैसे बनते हैं। चित्र भी सामने हैं, बाबा राय देते हैं कि घड़ी-घड़ी चक्र के सामने जाकर बैठो तो बुद्धि में सारा ज्ञान आ जायेगा कि हम अभी संगमयुग पर बैठे हैं और सभी अपने को कलियुग में समझते हैं। कलियुग को घोर अन्धियारा कहा जाता

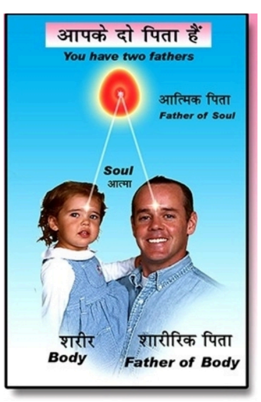

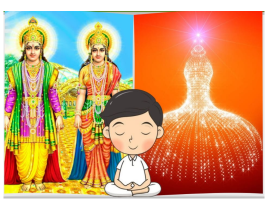

है। अभी तुम हो संगम पर। अभी तुमको रोशनी है, सतयुग में फिर तुमको यह ज्ञान नहीं मिलता है। बाप जब आते हैं तब ही घोर सोझरा होता है। यह संगमयुग है ही कल्याणकारी युग। इन जैसा युग कोई होता ही नहीं, जबकि बाप आते हैं। सतयुग को कल्याणकारी नहीं कहेंगे, वहाँ किसका कल्याण नहीं होता है। कल्याण संगम पर ही होता है। सतयुग में तो है ही कल्याण। संगम पर कलियुग को सतयुग, कल्याणकारी बनाते हैं। तो अब तुम्हारा देखो कितना कल्याण होता है, सिर्फ बाप और वर्से को याद करने में कितनी तुम्हारी कमाई है। कमाई की कमाई भी है और तन्दरूस्ती की तन्दरूस्ती भी है। तुम्हारा जीवन अमर बनता है। तुम्हारी कभी अकाले मृत्यु नहीं होती है। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए क्योंकि तुम्हारी बुद्धि में सारी नॉलेज है। यहाँ तुम बच्चे आते हो तो पुरुषार्थ कर म्युजियम में चित्रों पर समझाने के लायक बनना चाहिए। अपने को लायक बनाने के लिए 7-8 रोज़ बैठकर सीखो। प्रैक्टिस हुई, झट भागा सर्विस पर। सर्विस करके फिर लौट आये। यह सीखना तो बहुत सहज हैं। चित्र को सामने देखने से ही बुद्धि में आ जाता है कि हम संगम पर बैठे हैं।

कापारी खुशी

25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

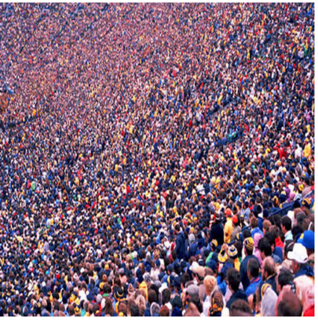

8 अरब की आबादी तक का सफर

आबादी	साल	कितने वर्ष लगे
1 अरब	1804	पहली बार दुनिया में 1 अरब लोग हुए
1 से 2 अरब	1804 से 1927	123 साल लगे
2 से 3 अरब	1927 से 1960	33 साल
3 से 4 अरब	1960 से 1974	14 साल
4 से 5 अरब	1974 से 1987	13 साल
5 से 6 अरब	1987 से 1999	12 साल
6 से 7 अरब	1999 से 2011	12 साल
7 से 7.9 अरब	2011 से 2022	11 साल

15 नवंबर 2022 को होंगे आठ अरब लोग

आज की दुनिया में बहुत मनुष्य हैं, कल बहुत थोड़े होंगे। इतने यह सब वापस जाने हैं। अभी बाप स्वयं आये हैं, बच्चों की कितनी इज्जत रखते हैं। दूरदेश का रहने वाला आया देश पराये... रावण का देश पराया देश है ना। राम के देश में तो कभी रावण आ न सके।

अभी तुम बच्चों की परवरिश तो बाप के हाथ में है। बस तुम्हीं से खाऊं अर्थात् तुम्हारे ही भण्डारे से खाऊं... तुम्हारी सारी परवरिश यहाँ ही होती है। जो सरेन्डर हो जाते हैं उनकी परवरिश तो होती ही है लेकिन जो मन से भी समझते हैं कि यह सब कुछ ईश्वर का (बाप का) है, मैं ट्रस्टी हूँ, हम श्रीमत पर ही चलकर खर्चा आदि करते हैं। ऐसे जो समझते हैं वह भी शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं। शिवबाबा के भण्डारे से खाने से हृदय शुद्ध होता है। ऐसे नहीं कि वह शिवबाबा के भण्डारे से नहीं खाते हैं। बाप के डायरेक्शन पर चलने वाले भी जैसेकि बाप के भण्डारे से खाते हैं। जिस भण्डारे से खाया, वह

तन को जोगी सब करें,
मन को बिरला कोई.
सब सिद्धि सहजे पाइए,
जे मन जोगी होइ.
अर्थ : SmitCreation.com
शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है. यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं.

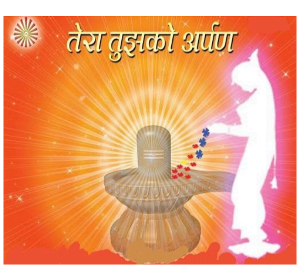

समझा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

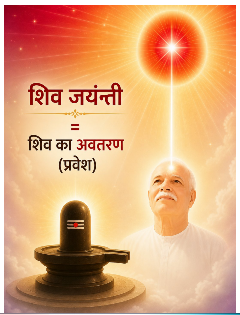

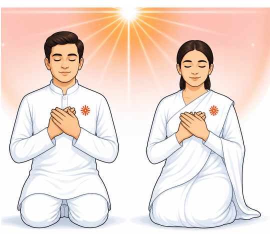

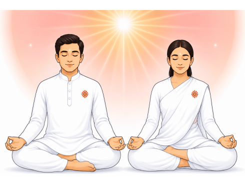

imp to understand

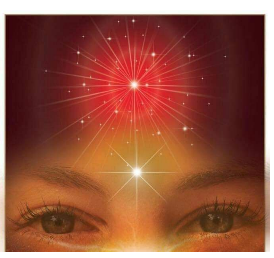

Point to ponder

भण्डारा भर-पूर काल कंटक दूर... उसके बाद तुम कभी भी अकाले मृत्यु को नहीं पायेंगे। इस समय ही शिवबाबा आते हैं, उनकी महिमा भी गाई हुई है। शिव जयन्ती भी मनाते हैं परन्तु उनका भण्डारा कैसे होता, यह कोई भी नहीं जानते हैं। बाबा भी बरोबर आते हैं ना। बच्चे जो भी आते हैं उनको शिवबाबा के भण्डारे से खाना मिलता है। अच्छा मेल सरेन्डर होता है तो ठीक है, अगर वह सरेन्डर नहीं होता तो मातायें क्या करें? क्योंकि कमाई है पति की। वह तो सरेन्डर होता नहीं। वह तो जब आमदनी करे तब स्त्री खाये। हाँ, जोड़ा सरेन्डर है तो फिर शिवबाबा के भण्डारे से परवरिश हो सकती है। यह बाप बच्चों को अच्छी रीति समझाते हैं। बुद्धि में रखना है हम बाप के पास बैठे हैं जब तक कर्मातीत अवस्था हो जाए। दिन-प्रतिदिन हम अपने स्वराज्य के नजदीक आते जाते हैं। समय बीतता जाता है, तुम नजदीक आते जाते हो। सतयुग के पहले वर्ष में अब कितने वर्ष कहेंगे? अब कितना नजदीक आ गये हैं? बाप कहते हैं बच्चे अब तुम्हारा 84 का चक्र पूरा होता है। तुमने अब 84 जन्मों के चक्र को जाना है। चक्र को देखने से ही कहेंगे हम अभी संगम पर हैं। इस तरफ है कलियुग,

उस तरफ है सतयुग। कल हम अपने सुखधाम में होंगे। दुनिया को पता नहीं है, वह तो बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बेहद के बाप से हम 21 जन्म की कमाई करते हैं। सदा सुख का वर्सा पा रहे हैं - यह खुशी रहती है। स्वर्गवासी बनना, यह तुम्हारी ही तकदीर में है। स्वर्ग एक वन्डरफुल चीज़ है। जैसे 7 वन्डर्स दिखाते हैं ना। यह तो सबसे बड़ा वन्डर है। चित्र भी हैं वन्डरफुल स्वर्ग के। यह लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक थे इसलिए बाबा ने लिखा था - ऊपर में सूर्यवंशी का लिखो उसके नीचे चन्द्रवंशी का लिखो तो आधाकल्प पूरा हो जायेगा। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी 1250 वर्ष। तो फिर लाखों वर्ष की तो बात ही उड़ जाये। वहाँ बाहुबल में कितना खर्चा होता है। यहाँ शुरू से लेकर अन्त तक कुछ भी खर्चा नहीं होता है। यह तो बाप और बच्चों का हिसाब है, खर्चे की बात ही नहीं। यहाँ बच्चे आकर रिफ्रेश हों इसलिए मकान आदि बनाते हैं। बच्चों का ही पैसा है सो भी कितने दिन तो पास हो गये। बाकी थोड़े दिन हैं, खर्चा कुछ भी नहीं। तुम जीवनमुक्ति पाते हो, बिगर कौड़ी खर्चे। इसमें सिर्फ मेहनत की बात है। भगवान को तो सब

चढ़ाओ नशा...

समझा?

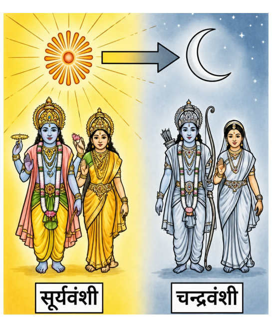

भक्त याद करते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि भगवान कौन है? भगवान को न जानने के कारण बहुतों को भगवान मान लेते हैं। अब तुम बच्चों को सच्चे बाप का परिचय देना है।

तुम बच्चों को अथाह खुशी रहनी चाहिए - बेहद का बाबा हमको पढ़ाते हैं, स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए। बाबा आकर स्वर्ग की स्थापना और नर्क का विनाश कराते हैं इसलिए महाभारत लड़ाई भी साथ में है। हर 5 हजार वर्ष बाद यह चक्र फिरता है। बाप भी कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आते हैं। गीता में उन्होंने फिर युगे-युगे लिख दिया है सो भी 5 युग है, पांच बार आये। फिर 24 अवतार, फलाना अवतार क्यों लिख दिया है! मनुष्य कितने यज्ञ, तप, तीर्थ आदि करते हैं, समझते हैं यह सब रास्ते भगवान से मिलने के हैं। परन्तु भगवान के पास तो कोई भी जा नहीं सकते हैं। आधाकल्प कितना माथा मारा है। जन्म-जन्मान्तर फेरे लगाये, यह किया... फिर भी बाप नहीं मिला। अभी बाप तुम बच्चों के कितना

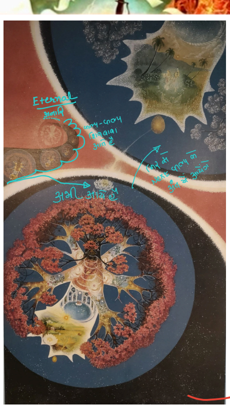

Simple Math..

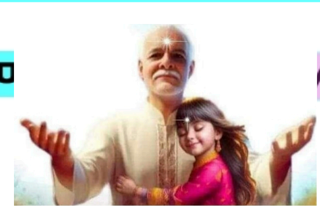

चढ़ाओ नशा...

25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

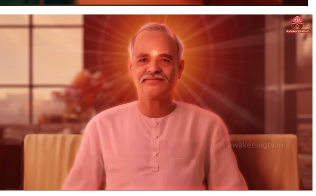

नजदीक है। तुमसे बात कर रहे हैं, तुमको समझा रहे हैं। तुम समझते हो कल्प-कल्प हूबहू हम ऐसे मिलते हैं जो कुछ बीता, कल्प-कल्प होगा। वही दादा जौहरी होगा। फिर उसमें ही बाबा प्रवेश करेंगे, फिर वही बच्चे आकर बाप के बनेंगे और फिर से स्वर्ग का वर्सा लेंगे। यह बाप का तुम बच्चों के साथ अनादि अविनाशी पार्ट कल्प-कल्प ऐसे ही रिपीट होता रहता है। अच्छा!

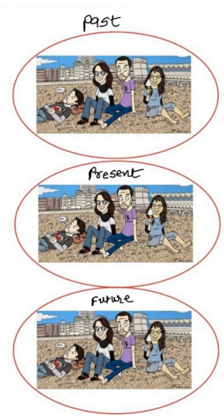

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) यह कल्याणकारी संगमयुग है, इसमें हर बात में कल्याण है, कमाई ही कमाई है। बाप और वर्से को याद कर 21 जन्म के लिए जीवन को अमर बनाना है।

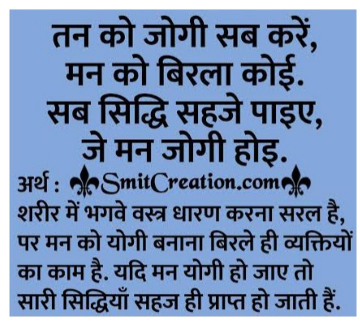

2) प्रवृत्ति में रहते मन-बुद्धि से सरेन्डर होना है। श्रीमत पर खर्चा करना है, पूरा ट्रस्टी होकर रहना है।

ऐसे मत समझो हम कुछ देते हैं।
तुम देते कुछ नहीं हो, यह तो रिटर्न में बहुत लेते हो।
एक का पदम् लेते हो - ये पक्का समझ लो

Method/Process/Instrument

25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- सहयोग की शक्ति से, असहयोगियों को सहयोगी बनाने वाले बाप समान परोपकारी भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

समझा?

सहयोगियों के साथ सहयोगी बनना - यह कोई महावीरता नहीं है लेकिन जैसे बाप अपकारियों पर उपकार करते हैं ऐसे आप बच्चे भी बाप समान बनो।

Most imp

कोई कितना भी असहयोगी बने, आप अपने सहयोग की शक्ति से असहयोगी को सहयोगी बना दो, ऐसे नहीं सोचो कि इस कारण से यह आगे नहीं बढ़ता है। कमजोर को कमजोर समझकर छोड़ न दो लेकिन उसे बल देकर बलवान बनाओ।

इस बात पर अटेन्शन दो तो सर्विस के प्लैन्स रूपी जेवरों पर हीरे चमक जायेंगे अर्थात् सहज प्रत्यक्षता हो जायेगी।

1 2

स्लोगन:- क्रोध का कारण है स्वार्थ वा ईर्ष्या - यही चिड़चिड़ेपन की जड़ है, पहले इसे ही समाप्त करो।

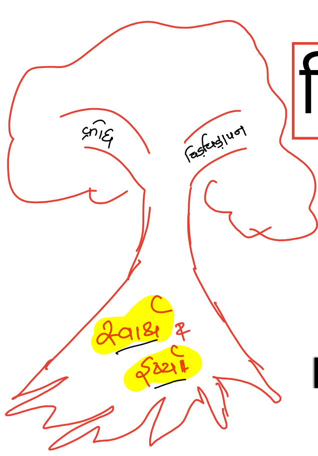

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

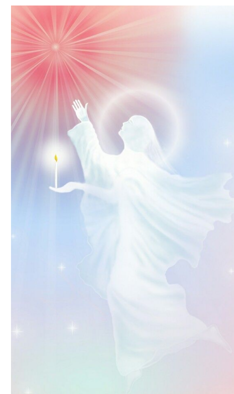

पवित्रता फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन का ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना ये कॉमन बात है

लेकिन अभी आगे बढ़े हो तो बचपन की स्टेज नहीं है, अभी तो वानप्रस्थ स्थिति में जाना है।

मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता तो है ही, सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ।

मूल फाउण्डेशन अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ।

25-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए दादी प्रकाशमणि जी का गुप्त पुरुषार्थ

(19 वें पुण्य स्मृति दिवस निमित्त विशेष धारणायें)

1- दादी जी ने सब जवाबदारियां सम्भालते हुए लक्ष्य रखा कि मुझे सर्वगुण सम्पन्न, सर्व कलाओं में सम्पन्न, निर्विकारिता में भी सम्पन्न.. बन सम्पूर्णता की मंजिल को प्राप्त करना ही है।

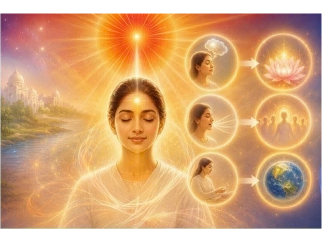

2- दादी जी ने मन वचन कर्म से डबल अहिंसक बन, सबको सुख दिया और सुख लिया। मन्सा से भी किसी आत्मा को न दु:ख दिया और न दु:ख लिया।

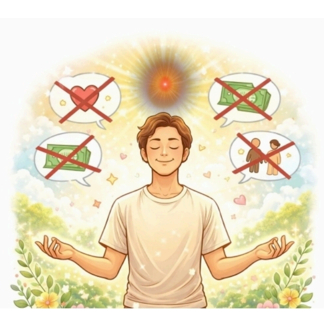

3- दादी जी सदा एक बाप की ही आकर्षण में रही, उन्हें किसी भी पुरानी वस्तु, व्यक्ति व तत्वों ने अपनी तरफ आकर्षित नहीं किया। सदा एक बाप की याद में रह अपनी सूक्ष्म वृत्तियों को भी एकाग्र किया।

4- सदा साक्षीपन की स्टेज में रह, सदा साथी के साथ का अनुभव किया। उनकी दृष्टि, वृत्ति में रूहानियत और अलौकिकता थी। उनके संस्कारों में इतनी रॉयल्टी थी जो उनकी आंख किसी में भी नहीं डूबी।

5- उन्होंने किसी का अवगुण चित पर नहीं रखा। किसी के अवगुण नोट नहीं किये। सदा परचिंतन, परदर्शन और परमत से मुक्त रह स्व-चिंतन में रही।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥
जो शत्रु-मित्रमें और मान-अपमानमें सम है तथा सरदी, गरमी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वोंमें सम है और आसक्तिसे रहित है ॥ १८ ॥ Adhyay-12
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥
जो निन्दा-स्तुतिको समान समझनेवाला, मननशील और जिस किसी प्रकारसे भी शरीरका निर्वाह होनेमें सदा ही सन्तुष्ट है और रहनेके स्थानमें ममता और आसक्तिसे रहित है—वह स्थिरबुद्धि भक्तिमान् पुरुष मुझको प्रिय है ॥ १९ ॥

6- दादी जी ब्रह्मा बाबा के समान सदा निर्मान रही। निराकारी और निरंहकारी स्थिति में रहने का अभ्यास किया। सदा स्वयं को सेवाधारी समझा। कभी अपनी महिमा स्वीकार नहीं की। किसी ने निंदा की तो घबराई नहीं और महिमा में खुश नहीं हुई। हर बात में अपनी स्थिति समान रखी।

7- बापदादा से मिली हुई दिव्य बुद्धि की सौगात को

सम्भाल कर रखा। सदा समर्थ संकल्प किये। हर कर्म श्रीमत प्रमाण हो, उसमें जरा भी मनमत व परमत मिक्स न हो, दिव्य बुद्धि के आधार पर हर संकल्प बोल और कर्म हो यही लक्ष्य रख सम्पूर्णता को प्राप्त किया।

8- सदा एक बल एक भरोसा, एक से ही सर्व सम्बन्ध, किसी तरफ भी झुकाव लगाव नहीं। सदैव भाई-भाई की वृत्ति से सबको देखा और रहमदिल के गुण को धारण कर कमजोर आत्माओं में बल भरा। अपकारियों पर भी उपकार किया।

9- हर छोटी बड़ी परिस्थिति को नथिंगन्यु की स्मृति से पार किया। कोई भी दृश्य को देख क्यों, क्या के प्रश्नों में उलझने के बजाए सदा साक्षी भाव को धारण कर, सदा हर्षित रही।

10- उनके हर बोल में रॉयल्टी दिखाई देती थी। कोई भी बोल साधारण नहीं बोला। उनके मुख से वही

बोल निकले जो होने वाले हैं। ऐसी सिद्धि स्वरूप आत्मा के संकल्प भी सिद्ध होने कारण सहज ही सम्पूर्णता को प्राप्त कर लिया।

11- दादी जी सदा आत्म विश्वास से भरपूर होने कारण इसी स्मृति में रही कि हम तो कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हैं। कोई भी पुराने संस्कार-स्वभाव वा हिसाब-किताब के अधीन नहीं रही। ऐसे अनुभव किया जैसे आत्मा लाइट के शरीर में निवास कर रही है।

12- दादी जी की बुद्धि स्वच्छ साफ आइने की तरह थी। वे निरन्तर तपस्वीमूर्त होकर रही। सदा यही स्मृति रही कि इस तपस्या से ही विश्व का कल्याण होगा, सुखमय संसार आयेगा।

13- दादी जी ने अन्तिम समय को सामने देखते हुए सदा स्व-चिन्तन किया। स्व-उन्नति के लिए रोज़ अमृतवेले बाबा से मीठी मीठी रूहरिहान की, बाबा

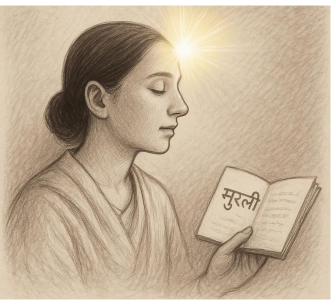

के महावाक्यों का गहराई से अध्ययन किया। बाबा के साथ बाबा की मुरली से अटूट प्यार रहा।

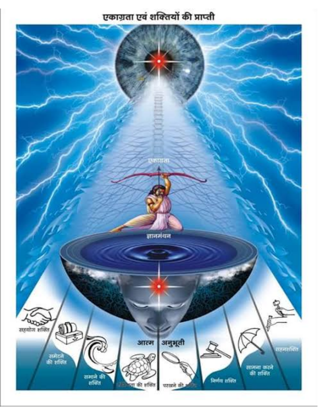

14- दादी जी ने अपनी सम्पूर्ण स्थिति बनाने के लिए देहभान से परे रहने का अभ्यास किया। उनकी बुद्धि में सदा यही रहा कि हम विश्व कल्याण के निमित्त हैं, हमें स्व की स्थिति ऊंची, एकाग्र, एकरस अथवा संकल्पों से परे निरसंकल्प बनानी है, तब हम इस पुरानी दुनिया से उड़कर बाबा के पास वतन में जाकर बैठेंगे।

15- सदा इसी लगन में रही कि मुझे बाबा की यादों में रह, सबको सन्तुष्ट करके सभी की दुआयें लेनी है। कोई भी आत्मा कभी मेरे से डिस्टर्ब होकर बददुआ न दें, इसका पूरा-पूरा ध्यान रख सबके दुआओं की पात्र बनी।

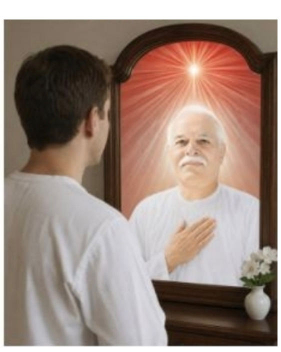

16- सदा एक ही लक्ष्य सामने रहा कि मुझे सम्पन्न फरिश्ता व कर्मातीत बनना है। यह पुराना तन छोड़

फरिश्ता बन अव्यक्त-वतन वासी बनना है। यह सेवायें तो दिनरात चलती रहेंगी। मुझे सेवा के साथ-साथ स्वयं पर सूक्ष्म अटेन्शन रख पास विद आनर बनना है। M.M.M.....imp.

17- दादी जी सदा सर्व विघ्नों से पार निर्विघ्न अवस्था में रही। एकान्त में बैठ अपने आपको सूक्ष्म चेक करके, अपनी कमी कमजोरियों को, आत्मा रूपी हीरे के दाग को सम्पूर्ण समाप्त कर, अमूल्य हीरा बन गई।

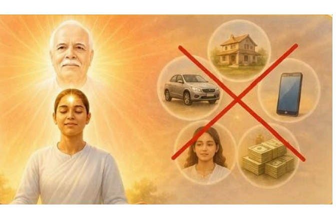

18- स्वयं को सम्पूर्ण पावन, लाइट माइट से सम्पन्न बनाने के लिए आन्तरिक वैराग्य वृत्ति द्वारा सब बातों से उपराम रह अपनी सूक्ष्म दृष्टि वृत्ति को सम्पूर्ण पावन बनाया। पुराने संस्कारों की प्रकृति को पराजय कर प्रकृतिजीत बन बाबा की गोद में समा गई।

19- मैं बाबा की हूँ, मुझे बाबा के समान सम्पूर्ण बनना ही है, इसलिए सूक्ष्म देह अभिमान को, स्वयं

के संस्कारों को, मान-शान व महिमा को, बुद्धि व आदतों को सम्पूर्ण समर्पण किया और बाप समान बन अव्यक्तवतन वासी बन गई। अच्छा - ओम् शान्ति।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.8 रूहानी खुशबू फैलाओ :

रोज़ अमृतवेले विश्व-वरदानी स्वरूप से विश्व-कल्याणकारी बाप के साथ कम्बाइण्ड रूप बन विश्व-वरदानी शक्ति और विश्व-कल्याणकारी शिव, शिव और शक्ति कम्बाइण्ड रूप से मनसा संकल्प वा वृत्ति द्वारा वायब्रेशन की खुशबू

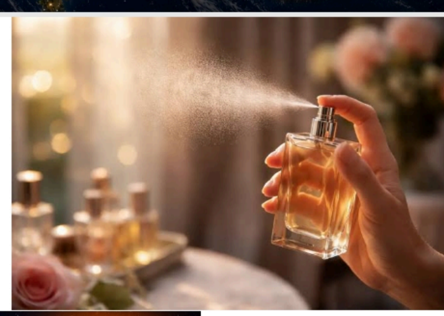

फैलाना। जैसे आजकल की स्थूल खुशबू के साधनों से भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशबू फैलाते हैं, कोई गुलाब की खुशबू, कोई चन्दन की खुशबू। ऐसे आप द्वारा सुख, शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनन्द की भिन्न-भिन्न खुशबू फैलती जाये। रोज़ अमृतवेले भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ वायब्रेशन्स के फाउन्टेन के मुआफिक ग्लोब के ऊपर गुलाबबाशी डालना। सिर्फ संकल्प का आटोमेटिक स्विच ऑन करना। यह तो आता है ना ? क्योंकि आज के विश्व में अशुद्ध वृत्ति की बदबू बहुत है। उसको खुशबूदार बनाओ।